नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651, मो.9960562305

शोधपरक रिपोर्ट

डॉ. कठेरिया के नेतृत्व में विषय- 'महिला सम्मान ,सुरक्षा और सशक्तिकरण' पर हुआ शोध।

	निरंजन कुमार, पीएच. डी. शोधार्थी, जनसंचार विभाग, म.गां.अं.हिं.विवि., वर्धा, महाराष्ट्र।
	नीरज कुमार सिंह, आईसीएसएसआर शोध सहायक, म.गां.अं.हिं.विवि., वर्धा, महाराष्ट्र।
	अविनाश त्रिपाठी, एम.ए. जनसंचार, जनसंचार विभाग, म.गां.अं.हिं.विवि., वर्धा, महाराष्ट्र।

डॉ. धरवेश कठेरिया

सहायक प्रोफेसर, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

E-mail:- dkskatheriya@yahoo.com

Cell No.:- +91 9922704241

- 58 प्रतिशत महिलाओं का मानना है कि 21वीं सदी में महिलाएं सशक्त नहीं हुई हैं।
- महिलाएं यात्रा एवं कार्यस्थल पर सबसे ज्यादा असुरक्षित महसूस करती हैं।
- महिला सशक्तिकरण को व्यक्तिगत स्वतंत्रता से जोड़कर देखती हैं महिलाएं।
- न्यू मीडिया के रुप में फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप्प के माध्यम से महिलाएं सशक्त हो रही हैं।
- 58.5 प्रतिशत महिलाओं का मानना है कि उन्हें समाज में उचित सम्मान मिल रहा है।

महिला सशक्तिकरण के लिए महिलाओं को चाहिए व्यक्तिगत स्वतंत्रता

किसी भी समाज के विकास में पुरुष और महिला दोनों का योगदान महत्वपूर्ण होता है। इसके अनेकों उदाहरण भारतीय संस्कृति में देखने को मिलते हैं। आजादी के लगभग 70 साल बाद भी महिलाओं को पुरुषों के बराबर स्थान प्राप्त नहीं हो सका है। समय और काल के साथ चीजें बदल जाती हैं लेकिन महिला सशक्तिकरण, महिला उत्थान एवं महिला सम्मान की बातें आज भी कागज पर ही दिखाई पड़ती हैं। नागपुर शहर में महिला सशक्तिकरण, सुरक्षा, सम्मान और कामकाजी महिलाओं को आम जनजीवन में आ रही परेशानियों को जानने के लिए महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के जनसंचार विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. धरवेश कठेरिया के नेतृत्व में विषय- 'महिला सम्मान, सुरक्षा और सशक्तिकरण' पर शोध हुआ।

प्रश्न-1	महिला सशक्तिकरण से आप क्या समझते हैं?			महिला सशक्तिकरण से आप क्या समझती हैं?			
पुरुष				महिला			
फैसलों में अहमियत देना	व्यक्तिगत स्वतंत्रता	शैक्षणिक जागरूकता	आर्थिक आत्मनिर्भरता	फैसलों में अहमियत देना	व्यक्तिगत स्वतंत्रता	शैक्षणिक जागरूकता	आर्थिक आत्मनिर्भरता
16.5%	35%	40%	8.5%	17%	33.5%	31.5%	18%

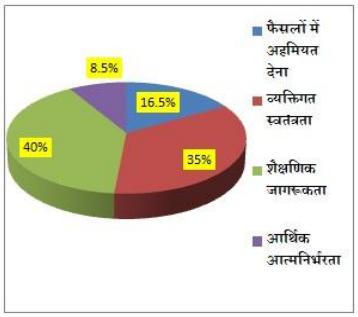

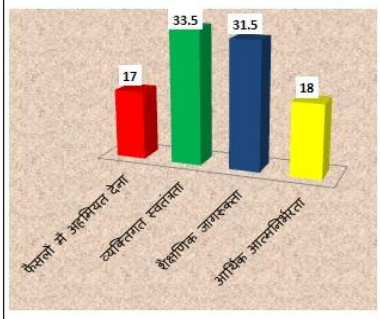

शोध में प्राप्त आंकडों के अनुसार 33.5 प्रतिशत महिलाएं, महिला सशक्तिकरण को व्यक्तिगत स्वतंत्रता से जोड़कर देखती हैं वहीं 40 प्रतिशत पुरुष प्रतिभागी शैक्षणिक जागरुकता को महिला सशक्तिकरण के रुप में देखते हैं। महिला वर्ग से प्राप्त 58.5 प्रतिशत आंकड़े यह दर्शाते हैं कि आज महिलाओं को उचित सम्मान मिल रहा है। जबकि पुरुष वर्ग से प्राप्त 47 प्रतिशत आंकड़े इस बात की पुष्टि करते हैं कि आज भी महिलाओं को समाज में उचित स्थान प्राप्त नहीं हो पा रहा है। 58 प्रतिशत महिलाओं का

प्रश्न-2	क्या वर्तमान परिवेश)परिवार, समाज और कार्यस्थलमें महिलाओं को (उचित सम्मान मिल रहा है?		क्या वर्तमान परिवेश)परिवार, समाज और कार्यस्थल (में आपको उचित सम्मान मिलता है?	
पुरुष			महिला	
हाँ	नहीं		हाँ	नहीं
47%	53%		58.5%	41.5%

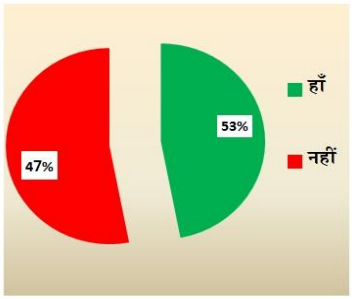

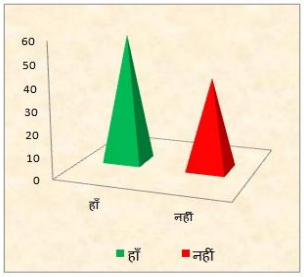

मानना है कि 21वीं सदी में महिलाएं सशक्त नहीं हुई हैं वहीं 65 प्रतिशत पुरुषों का मानना है कि महिलाएं 21वीं सदी में सशक्त हुई हैं।

शोध का हवाला देते हुए डॉ. कठेरिया ने कहा कि महिला सशक्तिकरण में मीडिया और सरकार का प्रयास सराहनीय है। लेकिन सरकार और मीडिया के लागातार प्रयासों के बाद भी महिलाएं सशक्त नहीं हुई हैं, महिला, सम्मान और सुरक्षा जैसी बातें तो दूर की बात है। 21वीं सदी के दौर में भी भारत अन्य देशों के मुकाबले महिला सुरक्षा और सम्मान जैसे शब्दों से जूझ रहा है। महिलाएं घर से बाहर कदम बढ़ा रही हैं लेकिन हर जगह महिलाओं की कार्यक्षमता को लेकर संदेह रहा है। पिछले कुछ दशकों में कार्यक्षमता के मामले में महिलाओं ने पुरुषों को कुछ मामलों में काफी पीछे छोड़ दिया है। समाज में महिलाओं के सम्मान से जुड़ी घटनाएँ रोज अखबारों की सुर्खियों में रहती हैं। इससे यह साफ होता है कि आज भी महिलाओं के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार किया जाता है। सरकार और समाज को महिलाओं के सम्मान, सुरक्षा और सशक्तिकरण जैसे विषयों पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है।

प्रश्न- 4	महिलाएं अपनी सुरक्षा को लेकर सतर्क/जागरूक हैं क्योंकि उनके पास है-				आप अपनी सुरक्षा को लेकर सतर्क/जागरूक हैं क्योंकि आपको है-				
पुरुष					महिला				
कानून की जानकारी	सुरक्षा हेतु मोबाइल तकनीक का उपयोग	आने-जाने हेतु सुरक्षित मार्गों का चयन	मेल-जोल को लेकर सतर्कता	उपरोक्त सभी	कानून की जानकारी	सुरक्षा हेतु मोबाइल तकनीक का उपयोग	आने-जाने हेतु सुरक्षित मार्गों का चयन	मेल-जोल को लेकर सतर्कता	उपरोक्त सभी
15%	10%	4.5%	11.5%	59%	19.5%	15.5%	7%	4.5%	53.5%

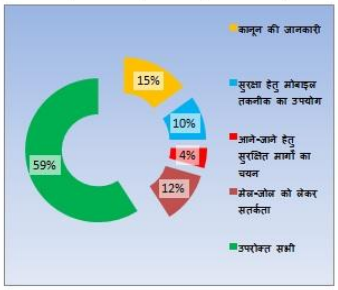

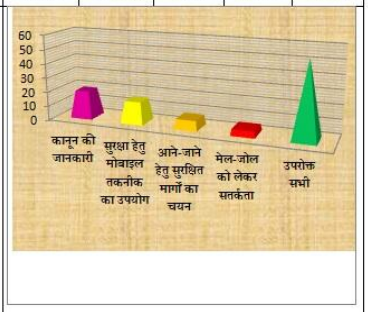

शोध संबंधी तथ्यों और आंकड़ों के संकलन के लिए 400 प्रश्नावली/अनुसूची को आधार बनाया गया है। प्रस्तुत शोध नागपुर के शहरी क्षेत्र में रहने वाले प्रतिभागियों के विचारों और सुझावों पर विशेष रुप से केंद्रित है। शोध में 18 वर्ष से अधिक आयु के पुरुष और महिला प्रतिभागियों से क्रमश: 200-200 प्रश्नावली को शोध का आधार बनाया गया है। जिनसे महिला सशक्तिकरण, सुरक्षा और महिला सम्मान की वर्तमान स्थिति को जानने और समझने का प्रयास किया गया है।

प्रश्न- 5	क्या महिला सम्मान, सुरक्षा एवं सशक्तिकरण को लेकर सरकार, समाज एवं मीडिया गंभीर है?		क्या आपकी नजर में महिला सम्मान, सुरक्षा एवं सशक्तिकरण को लेकर सरकार, समाज एवं मीडिया गंभीर है?	
पुरुष			महिला	
हाँ	नहीं		हाँ	नहीं
52%	48%		45%	55%

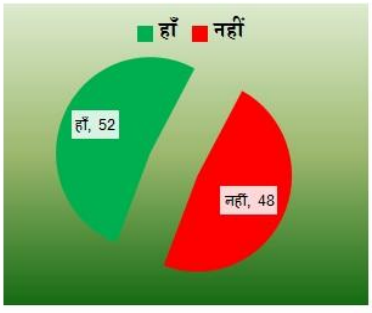

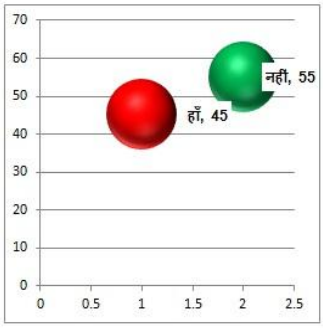

शोध के दौरान यह पाया गया कि महिलाएं अपनी सुरक्षा को लेकर जागरुक हो रहीं हैं। महिलाएं अपनी सुरक्षा के लिए क्रमशः कानूनी जानकारी 19.5 प्रतिशत, सुरक्षा हेतु मोबाइल तकनीक का उपयोग 15.5 प्रतिशत, आने-जाने हेतु सुरक्षित मार्गों का चयन 7 प्रतिशत व मेलजोल को लेकर सतर्कता के संदर्भ में 4.5 प्रतिशत महत्व देती हैं। जबकि पुरुष वर्ग महिला सुरक्षा को क्रमशः कानूनी जानकारी 15 प्रतिशत, सुरक्षा हेतु मोबाइल तकनीक का उपयोग 10 प्रतिशत, आनेजाने हेतु सुरक्षित मार्गों का चयन 4.5 प्रतिशत व मेलजोल को लेकर सतर्कता के संदर्भ में 11.5 प्रतिशत को महत्व देते हैं। महिला वर्ग से प्राप्त 45 प्रतिशत प्राप्त आंकड़े यह दर्शाते हैं कि सरकार, समाज एवं मीडिया महिला सम्मान, सुरक्षा एवं सशक्तिकरण को लेकर कितने गंभीर हैं जबकि पुरुष वर्ग से प्राप्त 52 प्रतिशत आंकड़े यह दर्शाते हैं कि सरकार, समाज एवं मीडिया महिला संबंधी मुद्दों को लेकर गंभीर हैं।

प्रश्न- 6	क्या वीं सदी में महिलाएं सशक्त21)empowered) हुई हैं?		क्या 21वीं सदी में आप अपने आपको सशक्त)empowered महसूस कर रही (हैं?	
	पुरुष		महिला	
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं
	65%	35%	42%	58%

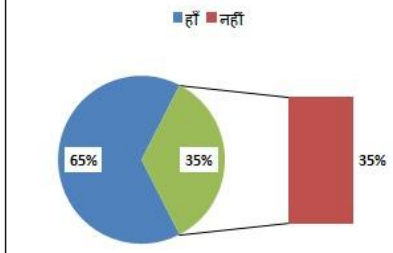

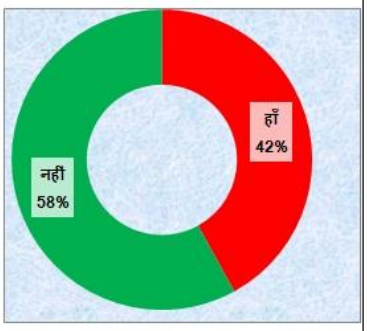

शोध अध्ययन में डॉ. कठेरिया के अलावा पीएच.डी. शोधार्थी निरंजन कुमार, आईसीएसएसआर परियोजना के शोध सहायक नीरज कुमार सिंह एवं एम.ए. जनसंचार के छात्र अविनाश त्रिपाठी की भूमिका महत्वपूर्ण रही।

शोध में शामिल प्रतिभागियों के अनुसार न्यू मीडिया के रुप में फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप्प ने 59 प्रतिशत मतों के साथ अपनी सशक्त भूमिका को प्रस्तुत किया है। महिलाएं इस माध्यम को सशक्तिकरण का महत्वपूर्ण माध्यम मानती हैं। जबकि पुरुष वर्ग भी महिला सम्मान, सुरक्षा और सशक्तिकरण में जनसंचार माध्यम के रुप में न्यू मीडिया को 65.5 प्रतिशत मतों के साथ प्राथमिकता देते हैं। आज घर से निकलते समय महिलाएं अपने साथ ले जाने के लिए अगर किसी वस्तु को महत्वपूर्ण मानती हैं तो वो है मोबाइल फोन। मोबाइल फोन ने आज हर वर्ग की महलाओं को एक हौसला प्रदान किया है। जिससे उनके कार्य करने एवं आत्मविश्वास में वृद्धि देखने को मिल रही है।

सुझाव

- महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए सामाजिक निर्णयों में भागीदारी के साथ-साथ आत्मनिर्भर होने की आवश्यकता है।
- 21वीं सदी में महिला सशक्तिकरण का सकारात्मक प्रभाव देखने को मिल रहा है लेकिन यह समय की आवश्यकता के अनुसार पर्याप्त नहीं है।
- महिला सशक्तिकरण के लिए सामाजिक, सांस्कृतिक और पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ-साथ तकनीकी और व्यापार के क्षेत्र में अपने योगदान को बढ़ाना होगा।
- बदलते समय में पुरुषवादी मानसिकता से मुक्त होकर महिला सशक्तिकरण के लिए प्राथमिकता के साथ वास्तविक धरातल पर कार्य किए जाएं।
- जनमाध्यमों को भी महिला सशक्तिकरण हेतु वरीयता के साथ महिला संबंधी मुद्दों को ज्यादा से ज्यादा प्रचारित एवं प्रसारित करने की आवश्यकता है जिससे अन्य महिलाओं में भी विश्वास और आगे बढ़ने की ललक विकसित हो।
- सरकार को महिला सशक्तिकरण संबंधी मुद्दों पर गंभीरता से विचार करते हुए उन्हें तत्काल आगे बढ़ाते हुए निर्णय लेना चाहिए।